(करबद्ध प्रार्थना कृपया पत्रिका को पैरों में न रखें)

श्री गिरिराज ज्योति

प्राचीन भारतीय संस्कृति, ज्योतिष विज्ञान की धार्मिक, पारिवारिक, त्रैमासिक पत्रिका

15 t|ykbl 2021 l 14 vDVcj 2021 rd

नवग्रह वाटिका के प्राँगढ़ में आपका हार्दिक अभिनन्दन!

सत्यमेव जयते

श्री गिरिराज ज्योति पत्रिका

ब्रज गौरव, प्रतिभा सम्मान 2000 से सम्मानित

प्रातः स्मरणीय श्रीसद्गुरूदेवों का अविस्मरणीय मिलन

आर्शीवादः– श्री सद्गुरूदेव पं० भँवर सिंह शर्मा 'जैमन'
(स्वतन्त्रता सैनानी/संरक्षक) एवं गोलोकवासी ब्रजसंत– गोवर्धन
प्रातः स्मरणीय पूज्यनीय श्री श्री 1008 श्री सद्गुरूदेव
पं० श्री हरे राम बाबा– जतीपुरा
पं० श्री बद्री नारायण जी, (कृष्णकुटी वाले)
पं० श्री प्रिया शरण दास जी
पं० श्री गया प्रसाद जी (बृजरज)

ब्रह्मा नन्द परम सुखंद केवल ज्ञान मूर्ति। द्वान्द्वातीतं गगन–सदृश तत्व मस्यादि लक्ष्यम्।।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षीभूतम्। भावा तीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरूं तं नमामि ।।

प्रधान संपादक

अभिलाषाः ।।कामये दुःख तप्तानाम् प्राणिनामार्ति नाशनम्।।
(मेरी कामना है कि दुःखों से पीड़ित प्राणियों के कष्ट दूर कर सकूं।)
प्रातः स्मरणीय सद्गुरूदेव, श्री गिरिराज महाराज, श्री नृःसिंह भगवान की अनुकम्पा तथा आप सभी के स्नेह से संकल्प अवश्य ही पूरा होगा।

आपका विद्वत्तकृपाकांक्षीं :

पं० कैलाश चन्द्र मिश्रा 'आचार्य'
(श्री नृःसिंह उपासक/रमल विशेषज्ञ)
स्वर्ण पदक से अलंकृत/संपादक
सलाहकार ABI अमेरिका

गोलोकवासी/प्रेरणास्त्रोत

श्रीमती लक्ष्मी मिश्रा (अंजू)

प्रधान कार्यालय

श्री गिरिराज ज्योति पत्रिका
श्री नृःसिंह रमल ज्योतिष शोध संस्थान
मंदिर श्री नृःसिंह भगवान, चकलेश्वर रोड
गोवर्धन – 281502 (मथुरा)
Mob.- 09412226020 / 09760689730
Email-- ramal_jyotish@yahoo.co.in
navgrahvatika@gmail.com

मूल्यः–
स्व० श्रीमती लक्ष्मी मिश्रा की स्मृति में एक प्रति निःशुल्क, 100/ वार्षिक।

श्री नरसिंह जय जय नरसिंह

जीवन के हर संकट में रमल ज्योतिष से कारण.

श्री नृःसिंह भगवान के द्वारा समाधान.

साक्षात् भक्त वत्सल श्री नृःसिंह भगवान की कृपा से स्थापित पराविज्ञान एवं रमल ज्योतिष पर हमारा शोध.

श्री लक्ष्मी नृःसिंह नवग्रह वाटिका

लोकमणि विहार, राधाकुण्ड परिक्रमा मार्ग, गोवर्धन (मथुरा)

के प्राँगढ़ में स्थापित

श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड (सम्पूर्ण ज्योतिषीय/वेदोक्त)

हमारे अनुभव के द्वारा पूर्ण विधान सहित पूजा कर आप अपने जीवन में आये हुये संकट अथवा पूर्व जन्मकृत अपराधों से मुक्ति हेतु श्री नृःसिंह भगवान की कृपा प्राप्त कर सुख एवं शान्ति का अनुभव कर सकते हैं..... जैसे :-

१- यदि आप **देवदोष-पितृदोष**, **कालसर्प दोष** से परेशान हैं तो **श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड** पर शास्त्रों में वर्णित **दीपदान** कर अपने संकट से मुक्ति प्राप्त करें।

२- यदि आप गृहदोष, परकृत बाधा, व्यापार बृद्धि, ऋण मुक्ति, नवग्रह शान्ति, शत्रु भय एवं अक्समात् आये संकट निवारण हेतु श्री नृःसिंह भगवान को शास्त्रोक्त सामिग्री अर्पित कर अपने संकट से मुक्ति प्राप्त करें।

३- यदि आप ग्रहदोष, (मंगल, शनि, राहु-केतु की दशा, अन्तर्दशा, अनेक आपत्तियों, कष्टों एवं कार्यों में आ रही बाधा, असाध्य रोगों के अवसर पर अभीष्ट फल प्राप्ति के लिये अचूक अनुभव सिद्ध श्री बटुक भैरवदेव की पूजा/पाठ/अनुष्ठान करके अपने जीवन में आये हुए संकट से मुक्ति प्राप्त करें।

४- आप घर बैठे नवग्रह वाटिका में (वीडियों द्वारा) पाठ कराकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

५- कृपया ध्यान दें:- **आपकी दृढ़ श्रद्धा, विश्वास, भक्ति एवं धैर्य ही आपको फल देगा।** हम तो **निमित्त मात्र** हैं।

रमल ज्योतिष द्वारा आप जान सकते हैं ?

भाग्य, रोजगार, विवाह, संतान, परीक्षाफल, ऋणमुक्ति, नष्टवस्तु (लाभालाभ), भागे व्यक्ति, रोग (परकृत बाधा किस कारण से), हारजीत, नौकरी, वर्षफल, अन्य सभी प्रश्नों के उत्तर एवं अक्समात् आये संकट का कारण और उसका सही समाधान आप रमल ज्योतिष के द्वारा प्राप्त कर लाभान्वित हो सकते हैं।

o"kZ&22

foØeh laor 2078 'kkd 1943

15 जुलाई 2021 से 14 अक्टूबर 2021 तक

vad&88

पत्रिका के अन्दर कहाँ क्या है ?

1.	आर्शीवाद, प्रार्थना, कवर सं0..	2
2.	संस्थान समाचार.......	1
3.	पत्रिका के अंदर............	2
4.	संकट निवारणार्थ........	3
5.	श्री नृःसिंह यंत्रराज प्रयोग.....	4
6.	प्रेम से हो सकता है हर	5
7.	ज्योतिष में पांच प्रकार की....	6
8.	अपनी इच्छानुसार फल.....	7–8
9.	प्रमुख श्राप जिनके कारण......	8–9
10.	पेड़–पौधों से जीवन.....	10–11
11.	कौनसा ग्रह कब देता है.....	12
12.	भाग्य को चमका देती है....	13–15
13.	संसार को राजी करना....	15
14.	स्तुति, नियम, कवर सं0.......	3

laLFkku fu;e %& Jh fxfjjkt T;ksfr esa Nih jpukvksa esa çdV fd;s x;s fopkjksa ls lEikn ,oa lEikn eMy dk lger gksuk vko';d ugha gS D;ksafd os y[kd ds viu s Hkko gSA fo"k; lkefxzh tufgr esa ladfyr dh tkrh gS] ftlds Hkh dqN gS] ge mlds lnSo vkHkkjh gSA ge fdlh ls dksbZ fookn ugha pkgrs fQj Hkh dksbZ okn&fookn gksrk gS rks mlds fy;s U;k; {ks= dsoy eFkqjk gh gksxkA fdlh Hkh çdkj dh dk;Zokgh çdk'ku frfFk ls 3 ekg ds vUnj dh tk ldrh gS] ckn esa fdlh Hkh iNrkN ij tckc gsrq ck/; ugha gSA

çdk'ku%&

if=dk dk çdk'ku o"kZ esa 4 ckj gksxkA

1& 15 tuojh 3& 15 tqykbZ

2& 15 vçSy 4& 15 vDVwcj

lEiknd e.My

पं0 कैलाश चन्द्र मिश्रा 'आचार्य'
^ç/kku lEiknd*
09760689730

अशोक कुमार गुप्ता ^lglEiknd*, मथुरा– 09412281034

आकाश मिश्रा ^lglEiknd*¼O;oLFkkid½, गोवर्धन – 08445289000

राज कुमार शर्मा, देहली – 09810290567

डा0 नागेन्द्र झा, देहली – 09312043072

सुभाष अग्रवाल, गुड़गांव – 09868827820

संजीव अग्रवाल, गुड़गांव – 09818367505

चैतन्य कृष्ण शर्मा, गोवर्धन–09456897876

डा0 अशोक विश्वामित्र, गोवर्धन

कन्हैया लाल गोस्वामी, गोवर्धन

हरीओम शर्मा (एड.), गोवर्धन

डा0 विनोद दीक्षित, गोवर्धन

सूरज भान जैमन (आर.ए.एस.), कोटा

नरेन्द्र सिंह सिसोंदिया, मथुरा

राजेन्द्र कैशोरैया (एड.), मथुरा

ओमप्रकाश खण्डेलवाल (एड.), मथुरा

सी0 पी0 चतुर्वेदी (एड.), मथुरा

अजय कुमार शर्मा 'संतोष', मथुरा

सियाराम शर्मा, गोवर्धन

दीपक शर्मा, गोवर्धन

योगेश शर्मा, गोवर्धन

मोहित मिश्रा, गोवर्धन – 07417071048

धर्मेन्द्र कौशिक, मथुरा– (मीडिया प्रभारी) 09997983147

एवं श्री गिरिराज ज्योति पत्रिका परिवार....

Jh ujflg t; t; ujflg !

lo ldV fuokj.kkFk Jh ujflg e=&r= ç;kx

भगवान श्री नृःसिंह देव का प्रादुर्भाव सतयुग में अपने भक्त प्रहलाद की भक्ति और शरणागति को ही श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए बड़े ही आश्चर्यजनक रूप में खम्ब फाड़कर प्रगट हुए थे। उनके उस रौद्र रूप को देख जगजननी माँ लक्ष्मी भी डर गयीं। भगवान नरसिंह अपने भक्त की प्रार्थना पर ही शांत हुए। श्री नरहरि ने सभी भक्तों को आनन्द प्रदान किया। उन्हीं भगवान श्री नरसिंह देव के यह बीज मंत्र-तंत्र-यंत्र भक्तों के अभीष्ट की पूर्ति एवं घोर संकट में लाभ के लिए ही प्रकाशित किये जा रहे हैं। आशा है भक्तजन इनको नियम-पूर्वक करने से भगवान श्री नरसिंह देव की कृपा अवश्य ही प्राप्त होगी। जिससे आपके संकटों का निवारण हो जायेगा। भक्तजनों से विनम्र प्रार्थना है कि इस मंत्र-तंत्र का प्रयोग अपने, अपने परिवार अथवा स्वजन के कष्ट निवारण के लिए ही करें उन्हें अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी। यदि किसी का अहित सोचकर कर्म किया गया तो उन्हें सफलता नहीं मिलेगी बल्कि स्वयं उन्हें ही कष्ट प्राप्त होगा क्योंकि सत्य की हमेशा जीत होती है।

यदि आप पूरे विधि विधान से भगवान नरसिंह जी का पूजन नहीं कर सकते तो आपको चलते फिरते मानसिक रूप से जयप्रद मंत्र का जाप करना चाहिए।

श्री नरसिंह बीज मंत्र प्रयोगः-

जयप्रद मंत्र- श्री नरसिंह जय जय नरसिंह! के जाप से भी मनोरथ पूरण होते हैं।

रोग मुक्ति के लिये मंत्रः-

ऊँ नृं नरसिंहाय नमः। प्रातःकाल सर्व प्रथम २५ बार उक्त मंत्र का जप करके स्वयं जल को पीता है तथा भगवान श्री नृःसिंह जी को चन्दन का लेप देने से रोग मुक्ति होती है।

संतान प्राप्ति के लिये मंत्रः-

ऊँ नृं नृं नरसिंहाय नमः। शायंकाल १०८ बार उक्त मंत्र का जप करके विधान सहित भगवान श्री नृःसिंह जी को लाल गुलाब का पुष्प अर्पित किया जाये तो कृपा प्राप्त होती है।

धन लाभ एवं अन्य संकट निवारण के लिये मंत्रः- ऊँ नृं नृं नृं नरसिंहाय नमः।

१. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित नागकेशर अर्पित करने से धन लाभ मिलता है।

२. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित मोर पंख चढ़ाने से कालसर्प दोष दूर होता है।

३. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित दही अर्पित करने से मुकदमों में विजय मिलती है।

४. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित बर्फीला पानी अर्पित करने से शत्रु पस्त होते हैं।

५. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित मक्की का आटा चढ़ाने से रूठा व्यक्ति मान जाता है।

६. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित लोहे की कील चढ़ाने से बुरे ग्रह टलते हैं।

७. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित चाँदी और मोती चढ़ाने से रूका धन मिलता है।

८. भगवान नरसिंह को शायंकाल में विधान सहित भगवा ध्वज चढ़ाने से रूके कार्य में प्रगति होती है।

यह सभी प्रयोग श्री नृःसिंह भगवान के मंदिर में ही करें। विशेष विधान वहाँ के सेवाधिकारी से पूछ लें अथवा हमसे सम्पर्क करें।

पं० कैलाश चन्द्र मिश्रा 'आचार्य'
(श्री नृःसिंह उपासक/रमल विशेषज्ञ)
संस्थापक श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड
मंदिर श्री नृःसिंह भगवान,
संस्थापक
श्री लक्ष्मी नृःसिंह नवग्रह वाटिका

श्री नरसिंह यंत्रराज प्रयोग

हमारा पराविज्ञान की सहायता से रमल ज्योतिष पर जनकल्याणार्थ शोध पर.....विश्व में प्रथमवार स्थाापित **श्री नरसिंह यंत्रराज** पर सर्व कार्य सिद्वि एवं सर्व संकट निवारणार्थ किये जाने वाले प्रयोग :- यदि आप पूर्ण श्रद्धा, विश्वास, भक्ति एवं धैर्य के साथ इस यंत्र की पूजा करते हैं तो निश्चित ही श्री नृःसिंह भगवान की कृपा प्राप्त कर अपने संकट से मुक्त हो सकते हैं। श्री नृसिंह ऋणमुक्ति यंत्र पर अलग-अलग चीजें चढ़ाने से भक्तों को अलग-अलग फल मिलता है। श्री नृसिंह ऋणमुक्ति यंत्र के उपायों से हर तरह की समस्या दूर होगी ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास हैं। श्री नृःसिंह भगवान के मंदिर में जाकर उनकी फूल और चंदन से यंत्र की पूजा करें। इसके बाद जो भी आपकी मनोकामना हो उसके अनुसार भगवान को वैसी वस्तु अर्पित करें। जैसे.....

१. धन प्राप्ति के लिये इस यंत्र पर भंगवान नृःसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित नागकेशर अर्पित करें।

२. यदि आपकी कुंडली में कालसर्प दोष है तो इस यंत्र पर भंगवान नृःसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित मोरपंख अर्पित करें।

३. किसी कानूनी उलझन में फंसे है और कोर्ट-कचहरी में चक्कर लगाते हुए थक गए हैं तो इस यंत्र पर भगवान को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित दही अर्पित करने से मुकदमों विजय मिलती है।

४. प्रतिस्पर्धा से परेशान हैं या अन्जान शत्रुओं का डर हमेशा बना रहता है तो भगवान नृःसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित बर्फ मिला श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड का जल मिट्टी के पात्र में अर्पित करें। शत्रु परास्त होगें।

५. अगर कोई आपसे नाराज है या दूर हो गया है तो उससे रिश्ते को फिर वैसे ही बनाने के लिए इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित मक्की का आटा चढ़ाने से रूठा व्यक्ति मान जाता है।

६. अगर आप कर्ज में डूब रहे हों या आपका पैसा मार्केट में फंस गया है, उधारी वसूल नहीं हो रही है तो इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित चांदी या मोती अर्पित करने से रूका धन मिलता होता है।

७. अगर शरीर में लंबे समय से कोई बीमारी है, राहत नहीं मिल पा रही है, तो इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित चंदन का लेप अर्पित करें।

८. यदि आप क्रूर ग्रहों से पीड़ित है तो इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित लोहे की कील चढ़ाने से क्रूर ग्रहों के कोप से रक्षा होती है।

९. यदि आपका कोई कार्य रूका हुआ है तो भगवान नरसिंह को शायंकाल में विधान सहित भगवा ध्वज चढ़ाने से रुके कार्य में प्रगति होती है।

१०. यदि क्रूर ग्रहों अथवा अन्य कारणों से किसी लड़के की शादी में बाधा आ रही है तो प्रत्येक शुक्रवार को इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित सफेद वस्तु अर्पण करने से शीघ्र ही विवाह का योग वनेगा।

११. यदि क्रूर ग्रहों अथवा अन्य कारणों से किसी लड़की की शादी में बाधा आ रही है तो प्रत्येक गुरूवार को इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित पीली वस्तु अर्पण करने से शीघ्र ही विवाह का योग वनेगा।

विशेष पूजाः- १. मुकदमे में विजय और विरोधियों को शान्त करने के लिएः- प्रतिदिन इस यंत्र पर भगवान नरसिंह की शायंकाल/रात्रि में विधान सहित पंचोपचार अथवा षोड़शोपचार पूजा करें, पूजा में लाल पुष्प, एक लाल रेशमी धागा अर्पित करें, उनके सामने घी का चौमुखी दीपक जलाएं। इसके बाद विशेष मंत्र की ५ माला जप करें। शत्रु और विरोधियों के शांत होने की प्रार्थना करें तदुपरांत सेवाधिकारी से अर्पित किए हुए धागे को दाहिने हाथ की कलाई में धारण करें।

२. कर्ज मुक्ति और धन प्राप्ति के लिये:- मंगलवार को इस यंत्र पर भगवान नरसिंह की शायंकाल/रात्रि में विधान सहित पंचोपचार अथवा षोड़शोपचार पूजा करें, तत्पश्चात श्री यंत्रराज के समक्ष तीन दीपक जलाएं, साथ ही जितनी आपकी उम्र है उतने ही लाल फूल अर्पित करें तदुपरांत विशेष मन्त्र **"ऊँ ऋणमुक्तेश्वर नरसिंहाय मम् ऋण मुक्तिं शीघ्रं कुरू कुरू श्री नरसिंहाय नमः"** का जप करते हुए मसूर की दाल (साबुत) अर्पित करें।

३. आयु रक्षा और सर्वकल्याण के लिएः- गुरूवार अथवा चतुर्दशी को इस यंत्र पर भगवान नरसिंह की शायंकाल/रात्रि में विधान सहित पंचोपचार अथवा षोड़शोपचार पूजा करें, उन्हें पीली वस्तुओं का भोग लगाएं.- इसके बाद विशेष मन्त्र का कम से कम १०८ बार जाप करें। **"उग्रं वीरं महाविष्णुं, ज्वलन्तं सर्वतोमुखं। नृःसिंहं भीषणं भद्रं, मृत्युं मृत्युं नमाम्यहं।।"** ।। श्री नरसिंह जय जय नरसिंह।।

प्रेम से हो सकता है हर समस्या का समाधान, मन भी रहता है शांत

आधुनिक समय में जीवन का संघर्ष अत्यंत नकारात्मक हो चुका है। चाहकर भी मनुष्य संवेदना और मानवीयता से नहीं जुड़ पा रहा है। परिस्थितियां मनुष्य को वैचारिक, सामाजिक, राजनीतिक और भावनात्मक स्तर पर तो अस्थिर किए ही हुए हैं साथ ही मनुष्य आत्मिक रूप में भी असंतुलित होकर पीड़ाग्रस्त है। ऐसे में मनुष्य के लिए भौतिक जगत में ऐसा कोई प्रेरणा स्रोत स्वयं उत्पन्न नहीं होगा जो उसे शांत, संतुलित और स्थिर करते हुए सन्मार्ग पर प्रशस्त करे। इस परिस्थिति में आत्मावलोकन ही एकमात्र उपक्रम है। इसी आंतरिक शक्ति से ऊर्जा प्राप्त कर मनुष्य आधुनिक विचलन से बच सकता है।

ऐसा आत्मावलोकन विचित्र है। यह स्व-प्रेरणा से सकारात्मक मनोभूमि में स्वयं उत्पन्न होता है। इसमें प्रयोग के लिए स्वयं को सम्मुख रखना पड़ता है। स्वयं को सन्मार्ग पर चलाने के लिए अपने भीतर अपने व्यक्तित्व का पहला कल्पना चित्र बनाएं। कल्पना करें कि आप लोगों की भीड़ में हैं। आपका अन्य व्यक्ति के साथ किसी बात पर झगड़ा, तीखा वाद-विवाद हो रहा है। आप और वह व्यक्ति तू-तू, मैं-मैं कर रहे हैं। फिर हाथापाई शुरू कर देते हैं। इस काल्पनिक प्रयोग से पता चलता है कि भीड़ के सम्मुख हम अन्य व्यक्ति के साथ जो क्रोधपूर्ण व्यवहार करते हैं, वह अत्यंत अनाकर्षक है। सोचें कि जब हमें अपना खुद का व्यवहार अपने कल्पना चित्र में अनाकर्षक लग रहा है तो हमारे जैसा दूसरा व्यक्ति, जो हमसे लड़-झगड़ रहा है, हमारे ऐसे नकारात्मक व्यवहार के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया कैसे दे सकता है!

अब दूसरा कल्पना चित्र बनाएं, जिसमें आप दूसरे व्यक्ति से झगड़ने-हाथा-पाई करने वाले व्यक्ति नहीं, बल्कि भीड़ में शांत खड़े दूसरे व्यक्ति हैं। उस शांत-प्रशांत व्यक्ति की दृष्टि से अपने और दूसरे झगड़ालू व्यक्ति का व्यक्तित्व ध्यानपूर्वक देखें। शांत चित्त व्यक्ति के रूप में आपको अपने उस व्यक्तित्व से गहन घृणा हो जाएगी जो अन्य व्यक्ति से झगड़ रहा है। आपको लगेगा कि आप से पतित दुनिया में दूसरा कोई नहीं है। यह अनुभव हमें आत्मज्ञान से भरता है। इस प्रयास से हम दूसरे व्यक्तियों के साथ संबंधों के महत्व को ढंग से समझ पाते हैं। इस अनुभवगत व्यवहार की बड़ी उपलब्धि यह होती है कि हम समस्त मानवीय दुर्गुणों से अलग होने के लिए अभ्यस्त बन जाते हैं।

अब तीसरा कल्पना चित्र देखें। इसमें हम, हमसे लड़ने-झगड़ने वाले व्यक्ति के साथ उसके बुरे बर्ताव, दुर्व्यवहार के बाद भी प्रेम व शांति से संवाद करते हैं। उसे शांत करने के लिए मृदुभाषा का प्रयोग करते हैं और धीरे-धीरे उसे शांत करके उसे इस अवस्था में ले आते हैं कि गलती उसी की है। वह आपसे क्षमा की याचना करता है। आप उसे क्षमा करते हैं। विनम्रता वाली हमारी यह छवि न केवल हमारे लिए, बल्कि हमसे झगड़ रहे व्यक्ति और झगड़े को घृणित सामाजिक व्यवहार समझ कर देख रहे लोगों के लिए प्रिय, प्रशंसित और प्रभावशाली होती है। इस प्रकार लड़ाई-झगड़ा और विवाद एकपक्षीय होकर धीरे-धीरे खत्म हो जाता है और संबंधों में मधुरता आती है। यह अनुभव सिखाता है कि व्यक्ति का मधुर व्यवहार, उसका प्रशांत चिंतन-मनन और सर्वोपरि आत्मदर्पण में अपने दुर्गुणों व दुर्व्यवहार को देखने के बाद उपजी उसकी आत्मचेतना उसे वास्तव में महान बनाती है।

ज्योतिष में पांच प्रकार की होती हैं तिथियां किसमें कौन-सा कार्य करना होता है शुभ

हिंदू पंचांग में काल गणना का प्रमुख हिस्सा होती हैं तिथियां। तिथियों के अनुसार ही व्रत-त्योहार तय किए जाते हैं। कोई भी शुभ कार्य करने से पहले शुभ तिथियां देखी जाती है। ये शुभ-अशुभ तिथियां आखिर होती क्या हैं और किस तिथि का क्या महत्व है आइये जानते हैं।

प्रत्येक हिंदू माह में १५-१५ दिन के शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष होते हैं। प्रत्येक पक्ष में प्रतिपदा से लेकर पंद्रहवीं तिथि तक की संख्या होती है। शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक और कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक। इस तरह दोनों पक्षों में १५-१५ दिन होते हैं। अब इनमें से कुछ तिथियां शुभ मानी गई हैं, तो कुछ अशुभ। अशुभ तिथियों में कोई भी शुभ कार्य सम्पन्न नहीं किया जाता है। हिंदू शास्त्रों के अनुसार तिथियों को मुख्य रूप से पांच भागों में बांटा गया है। ये पांच भाग हैं नंदा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा।

क्रमानुसार पहली तिथि यानी प्रतिपदा होगी नंदा, द्वितीया भद्रा, तृतीया जया, चतुर्थी रिक्ता और पंचमी पूर्णा।

इसके बाद पुनः षष्ठी नंदा, सप्तमी भद्रा...... इस तरह यह क्रम चलता रहेगा।

किस तिथि में करें कौन सा कार्यः-

नंदा तिथिः- प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी नंदा तिथि कहलाती हैं। इन तिथियों में व्यापार-व्यवसाय प्रारंभ किया जा सकता है। भवन निर्माण कार्य प्रारंभ करने के लिए यही तिथियां सर्वश्रेष्ठ मानी गई हैं।

भद्रा तिथिः- द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी भद्रा तिथि कहलाती हैं। इन तिथियों में धान, अनाज लाना, गाय-भैंस, वाहन खरीदने जैसे काम किए जाना चाहिए। इसमें खरीदी गई वस्तुओं की संख्या बढ़ती जाती है।

जया तिथिः- तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी जया तिथियां कहलाती हैं। इन तिथियों में सैन्य, शक्ति संग्रह, कोर्ट-कचहरी के मामले निपटाना, शस्त्र खरीदना, वाहन खरीदना जैसे काम कर सकते हैं। **रिक्ता तिथिः-** चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी रिक्ता तिथियां कहलाती हैं। इन तिथियों में गृहस्थों को कोई कार्य नहीं करना चाहिए। तंत्र-मंत्र सिद्धि के लिए ये तिथियां शुभ मानी गई हैं।

पूर्णा तिथिः- पंचमी, दशमी और पूर्णिमा पूर्णा तिथि कहलाती हैं। इन तिथियों में मंगनी, विवाह, भोज आदि कार्यों को किया जा सकता है।

शून्य तिथि उपरोक्त पांच प्रकार की तिथियों के अलावा कुछ तिथियों को शून्य तिथि माना गया है। इन तिथियों में विवाह कार्य नहीं किए जाते हैं। बाकी अन्य कार्य किए जा सकते हैं। ये तिथियां हैं चैत्र कृष्ण अष्टमी, वैशाख कृष्ण नवमी, ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी, ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी, आषाढ़ कृष्ण षष्ठी, श्रावण कृष्ण द्वितीया और तृतीया, भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा एवं द्वितीया, आश्विन कृष्ण दशमी और एकादशी, कार्तिक कृष्ण पंचमी एवं शुक्ल चतुर्दशी, अगहन कृष्ण सप्तमी व अष्टमी, पौष कृष्ण चतुर्थी एवं पंचमी, माघ कृष्ण पंचमी और माघ शुक्ल तृतीया।

हमारे यहाँ हस्त लिखित जन्म- पत्र फलादेश सहित तैयार किये जाते हैं।

पं० आकाश मिश्रा

08445289000

Web. www.navgrahvatika.com

अपनी इच्छा अनुसार फल प्राप्त करने के लिए शिवलिंग पर चढ़ाए

भगवान शिव को समर्पित श्रावण महीने की शुरूआत होते ही भक्तों पर आस्था और भक्ति का शबाब पूरी तरह से चढ़ चुका होता है।

ये वो पावन महीना है जिसमें हर कोई भगवान शिव को प्रसन्न करने की कोशिशों में लगे रहते हैं और अपनी इच्छा पूर्ति करना चाहते हैं तो चलिए हम आपको बताते है कि शिव महापुराण के अनुसार शिवलिंग पर कौन सी चीज चढ़ाने से आप कौन सा फल प्राप्त कर सकते हैं:-

भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए:-

१- चावलः- अगर आप आर्थिक तंगी से गुजर रहे है और आपको धन की आवश्यकता है तो सावन में शिवलिंग पर अक्षत यानी चावल अर्पित करें इससे धन प्राप्ति की संभावना प्रबल होती है।

२- तिलः- सावन के महीने में शिवलिंग पर तिल अर्पित करने से भगवान शिव की प्रसन्नता के साथ ही आपके सभी पापों का नाश हो जाता है।

३- जौः- अगर आप भौतिक सुख सुविधाओं की प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं तो आपको शिवलिंग पर जौ चढ़ाना चाहिए क्योंकि इससे आपके सुख में वृद्धि हो सकती है।

४- गेहूंः- अगर आप संतान प्राप्ति की कामना रखते हैं तो इसके लिए आपको सावन के महीने में शिवलिंग पर गेंहू चढ़ाना चाहिए इससे संतान वृद्धि होती है। हालांकि शिवलिंग पर चढ़ाए गए सभी अन्न बाद में गरीबों में बांट देना चाहिए।

५- घीः- शिव पुराण के अनुसार अगर कोई नपुंसक व्यक्ति घी से भगवान शिव का अभिषेक करके ब्राह्मणों को भोजन कराए और सोमवार का व्रत करे तो इससे उसकी हर समस्या का समाधान हो सकता है।

६- शक्कर मिश्रित दूधः- अगर आप अपने दिमाग को तेज बनाने की चाह रखते हैं तो शक्कर मिश्रित दूध से शिवलिंग का अभिषेक करें।

७- सुगंधित तेलः- सावन के महीने में सुगंधित तेल से भगवान शिव का अभिषेक करने से समृद्धि में बढ़ोत्तरी होती है।

८- गन्ने का रसः- गन्ने के रस से शिवलिंग का अभिषेक करने से भगवान शिव की प्रसन्नता के साथ आपको सभी आनंदों की प्राप्ति हो सकती है।

९- गंगाजलः- अगर आप भोग के साथ-साथ मोक्ष की भी कामना रखते हैं तो फिर सावन में आपको गंगाजल से भगवान शिव का अभिषेक करना चाहिए।

१०- शहदः- टीबी रोग के अलावा अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में आराम पाने के लिए शिवलिंग पर शहद चढ़ाना चाहिए। इससे तमाम रोगों में आराम मिलता है।

११- जलधाराः- बुखार होने पर भगवान शिव को जलधारा चढ़ाने से जल्दी ही आराम मिलता है। इसके अलावा सुख और संतान की प्राप्ति के लिए भी जलधारा द्वारा शिव की पूजा उत्तम बताई गई है।

इन फूलों से प्रसन्न होते हैं भगवान शिवः- वैसे तो बेलपत्र भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है। शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ाने से भगवान शिव अपने भक्तों पर अत्यंत प्रसन्न होते हैं। इसके अलावा शिव पुराण के अनुसार कुछ ऐसे फूल और पत्तों के बारे में बताए गए हैं जिन्हें भगवान शिव के चरणों में अर्पित करने से आप मनाचाहा फल प्राप्त कर सकते है।

१- लाल और सफेद आंकड़े के फूलों से भगवान शिव की पूजा करने से भोग व मोक्ष की प्राप्ति होती है।

२- सावन में चमेली के फूलों से अगर भगवान शिव का पूजन करेंगे तो इससे आपको वाहन सुख का प्राप्ति हो सकती है।

३- अलसी के फूलों से भगवान शिव का पूजन करने से भगवान शिव तो प्रसन्न होते ही हैं लेकिन इससे भगवान विष्णु की भी कृपा प्राप्त होती है।

४- शमी के पत्तों से पूजन करेंगे तो आपको मृत्यु के पश्चात मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

५- बेला के फूलों से भगवान शिव की पूजा करने से सुंदर और सुशील पत्नी की प्राप्ति होती है।

६- जूही के फूलों से भगवान शिव का पूजन करने से घर में कभी अन्न-धन की कमी नहीं होती है।

७- कनेर के फूलों से शिव पूजन करेंगे तो आपको नए वस्त्रों को पहनने का सुख प्राप्त होगा।

८- हारसिंगार के फूलों से पूजन करने पर शिवजी की कृपा से आपकी सुख संपत्ति में बढ़ोत्तरी होती है।

९- धतूरे के फूलों से पूजन करने पर शिवजी की कृपा से सुयोग्य पुत्र की प्राप्ति होती है। लाल डंठल वाले धतूरे को बेहद शुभ माना गया है।

१०- शिवलिंग पर दूर्वा चढ़ाने से भगवान शिव प्रसन्न होते हैं और अपने भक्तों की आयु को बढ़ाते हैं।

अगर आप भी भगवान शिव की कृपा के साथ अपना मनचाहा फल प्राप्त करना चाहते हैं तो फिर पूरे सावन में अपनी कामना के अनुसार शिवलिंग पर उससे संबंधित वस्तू अर्पित करके भगवान शिव का पूजन करें।

vkidk vkt dk i#"kkFk
vkidk dy dk Hkfo"; gA

प्रमुख श्राप जिसके कारण नहीं होती पुत्र की प्राप्ति

ज्योतिष मान्यता के अनुसार वैसे तो कई तरह के श्राप या योग बताए गए हैं जिसके चलते पहले तो संतान नहीं होती है, यदि संतान हो जाती है तो संतान को कष्ट होता है या संतान की मृत्यु भी हो सकती है। पराशर संहिता में भी कुछ इसी तरह के श्रापों का वर्णन किया गया है।

१. सर्प श्रापः- इस श्राप के प्रमुख आठ योग या प्रकार बताए गए हैं। यह योग राहु के कारण बनता है। इसके लिए नाग प्रतिमा बनाकर विधि पूर्वक पूजा की जाए और अंत में हवन कर दान किया जाए तो इस श्राप का प्रभाव नष्ट हो जाता है। इससे नागराज प्रसन्न होकर कुल की वृद्धि करते हैं।

२. पितृ श्रापः- कहते हैं कि यदि किसी जातक ने पूर्वजन्म में अपने पिता के प्रति कोई अपराध किया है तो उसे इस जन्म संतान कष्ट होता है। यह कुल मिलाकर ११ योग या दोष है। यह दोष या योग सूर्य से संबंधित है। इसके अलावा अष्टम स्थान में राहु या अष्टमेश राहु से पापाक्रांत हो तो इसको पितृ दोष या पितर श्राप भी कहा गया है। इसके उपाय हेतु पितृ श्राद्ध करना चाहिए।

३. मातृ श्रापः- ज्योतिष मान्यता अनुसार पंचमेश और चंद्रमा के संबंधों पर आधारित यह योग बनता है। मंगल, शनि और राहु से बनने वाले ये कुल १३ प्रकार के योग है। गत जन्म में किसी जातक ने यदि माता को किसी भी प्रकार से कष्ट दिया है तो यह योग बनता है। इसके उपाय के लिए माता की सेवा करना जरूरी है। इसके अलावा उक्त ग्रहों की शांति कराएं।

४. भ्रातृ श्रापः- यह योग भी कुल १३ प्रकार का है जो कि पंचम भाव, मंगल और राहु के

चलते बनता है। यदि किसी जातक ने गतजन्म में अपने भाई के प्रति कोई अपराध किया है तो यह श्राप बनता है। इसके उपाय हेतु हनुमान चालीसा का नित्य पाठ करें, हरिवंश पुराण का श्रवण करें, चन्द्रायण व्रत करें, पवित्र नदियों के किनारे शालिग्राम के सामने पीपल वृक्ष लगाएं तथा पूजन करें।

५. मामा का श्रापः- यह योग पंचम भाव में बुध, गुरु, मंगल एवं राहु और लग्न में शनि के चलते बनता है। इस योग में शनि-बुध का विशेष योगदान होता है। कहते हैं कि पिछले जन्म में जातक ने अपने मामा को किसी भी प्रकार से घोर कष्ट दिया होगा तो यह कुंडली में योग बना। इसके उपाय हेतु तालाब, बावड़ी, कुआं आदि बनवाने का विधान है। उसे बनवाकर वहां भगवान विष्णु की मूर्ति की स्थापना करें।

६. ब्रह्म श्रापः- यह योग या दोष कुल ७ प्रकार का होता है। नवें भाव में गुरु, राहु या पाप ग्रहों से यह योग बनता हैं। कहते हैं कि गत जन्म में किसी भी जातक ने यदि किसी ब्राह्मण को घोर कष्ट दिया है तो यह श्राप बनता है। इसकी शांति हेतु पितृ शांति करें और फिर प्रायश्चित स्वरूप ब्राह्मणों को भोज कराकर उन्हें दक्षिणा दें।

७. पत्नी का श्रापः- यह कुल ११ प्रकार का दोष या योग है जो सप्तम भाव में पाप ग्रहों के चलते बनता है। कहते हैं कि यदि किसी जातक ने गत जन्म में अपनी पत्नी को मृत्यु तुल्य कष्ट दिया होगा तो ही यह योग बना। इसके उपाय हेतु कन्याओं को भोज कराएं और किसी कन्या का विवाह कराएं। इसका उपाय किसी ज्योतिषी से पूछें।

८. प्रेत श्रापः- यह कुल ६ योग बताए गए हैं। खासकर यह दोष सूर्य और नवें भाव से संबंधित हैं। कहते हैं कि जो जातक अपने पितरों का श्राद्ध नहीं करता है वह अगले जन्म में अपुत्र हो जाता है। इस दोष की निवृत्ति के लिए पितृ श्राद्ध करें।

९. ग्रह दोषः- यह योग कई प्रकार का होता है। यदि बुध और शुक्र के दोष में संतान हानि हो रही है तो इसके लिए भगवान शंकर का पूजन, गुरु और चंद्र के दोष में संतान गोपाल का पाठ, यंत्र और औषधि का सेवन, राहु के दोष से कन्या दान, सूर्य के दोष से भगवान विष्णु की आराधना, मंगल और शनि के दोष से षड़ंग शतरुद्रीय जप कराने चाहिए।

संतान में रुकावट के कारणः- जब पंचम भाव का स्वामी सप्तम में तथा सप्तमेश सभी क्रूर ग्रह से युक्त हो तो वह स्त्री मां नहीं बन पाती। पंचम भाव यदि बुध से पीड़ित हो या स्त्री का सप्तम भाव में शत्रु राशि या नीच का बुध हो, तो स्त्री संतान उत्पन नहीं कर पाती। पंचम भाव में राहु हो और उस पर शनि की दृष्टि हो तो, सप्तम भाव पर मंगल और केतु की नजर हो, तथा शुक्र अष्टमेश हो तो संतान पैदा करने में समस्या उत्पन्न होती हैं। सप्तम भाव में सूर्य नीच का हो अथवा शनि नीच का हो तो संतानोत्पत्ति में समस्या आती है।

कृपया ध्यान दें:-
आपकी श्रद्धा, आपका विश्वास आपको फल देगा।
हम तो निमित्त मात्र हैं।

श्री नरसिंह जय जय नरसिंह।

जीवन के हर संकट में
श्री नरसिंह भगवान आपकी रक्षा करें.

आपका संकट निवारण एवं
संतुष्टि ही हमारा लक्ष्य !

पेड़-पौधों से जीवन को अनुकूल बनाये

प्रभाव सकारात्मक भी होता है और नकारात्मक भी। नकारात्मक प्रभाव को रोकने या कम करने के लिए विभिन्न प्रकार के तरीके अपनाए जाते हैं, कहीं मंत्र जाप की सलाह दी जाती है, कहीं रत्न धारण करने की सलाह दी जाती है, तो कहीं पर छोटे-छोटे टोटके अपनाए जाते हैं। इनके अलावा कुछ और तरीके भी हैं, जिनका प्रयोग करके ग्रहों से संबंधित समस्याओं को दूर कर सकते हैं और अपने जीवन को बेहतर कर सकते हैं।

इन्ही में से एक आसान तरीका है... पेड़-पौधों का रोपण और पूजनः-

तुलसीः- परंपराओं और धार्मिक दृष्टिकोण से तुलसी के पौधे को सबसे ज्यादा महत्व प्राप्त है। इसके पत्ते और बीज को खाने से जहां एक तरफ रोगों से मुक्ति मिलती है, वहीं इसको घर में लगाने से घर की नकारात्मक ऊर्जा समाप्त हो जाती है। इसको घर के बीचोबीच में लगाना लाभदायक होता है।

पूजन-लाभः- इसके नीचे रोज शाम को घी का दीपक जलाने से पारिवारिक अशांति दूर होती है और वैवाहिक जीवन सुखमय होता है। भगवान विष्णु और हनुमान जी को तुलसी अर्पित करने से आर्थिक बाधाएं दूर होती हैं। अगर शुक्र कमजोर है, तो तुलसी का पौधा लगाकर नियमित रूप से उसकी पूजा-उपासना करनी चाहिए, फायदा मिलेगा।

केलाः- ज्योतिष और धार्मिक रूप से इस पौधे का भी विशेष महत्व है। ग्रहों में इसका संबंध बृहस्पति से जोड़ते हैं और भगवान विष्णु तथा बृहस्पति देवता का स्वरूप माना जाता है। बृहस्पति के कमजोर होने पर इस पौधे को घर में अवश्य लगाना चाहिए।

पूजन-लाभः- नित्य प्रातः इसमें जल डालने से अविवाहितों के विवाह में आ रही रुकावटें दूर होती हैं। लेकिन इस पौधे को घर के मुख्य द्वार पर नहीं लगाएं, अन्यथा घर की सुख-शांति में खलल पैदा हो सकता है। बेहतर होगा इसको घर के पीछे की ओर लगाया जाए। या मंदिर में लगाकर देखभाल करें जल से सींचें लाभ होगा

अनारः- अनार एक ऐसा अद्भुत और जादुई पौधा है, जिसको लगाने से घर पर तंत्र-मंत्र और नकारात्मक ऊर्जा असर नहीं कर सकते। ज्योतिष में राहु-केतु को नियंत्रित करने के लिए इस पौधे का प्रयोग करते हैं। यह पौधा इतना महत्वपूर्ण है कि यंत्र लिखने के लिए अनार की कलम का ही प्रयोग किया जाता है।

पूजन-लाभः- अनार का पौधा घर के सामने लगाएं तो सवोत्तम होगा। घर के बीचोबीच पौधा न लगाएं। अनार के फूल को शहद में डुबाकर नित्यप्रति या फिर हर सोमवार भगवान शिव को अगर अर्पित किया जाए, तो भारी से भारी कष्ट भी दूर हो जाते हैं और व्यक्ति तमाम समस्याओं से मुक्त हो जाता है।

शमीः- शमी के पौधे के बारे में तमाम भ्रांतियां मौजूद हैं और लोग आम तौर पर इस पौधे को लगाने से डरते-बचते हैं। ज्योतिष में इसका संबंध शनि से माना जाता है और शनि की कृपा पाने के लिए इस पौधे को लगाकर इसकी पूजा-उपसना की जाती है।

पूजन-लाभः- इसका पौधा घर के मुख्य द्वार के बाईं ओर लगाना शुभ है। शमी वृक्ष के नीचे नियमित रूप से सरसों के तेल का दीपक जलाएं, इससे शनि का प्रकोप और पीड़ा कम होगी और आपका स्वास्थ्य बेहतर बना रहेगा। विजयादशमी के दिन शमी की विशेष पूजा-आराधना करने से व्यक्ति को कभी भी धन-धान्य का अभाव नहीं होता।

पीपलः- ग्रहों में इसका संबंध बुध, शनि और बृहस्पति से जोड़ा जाता है। पीपल का वृक्ष घर

में या घर के सामने लगाना उचित नहीं माना जाता, क्योंकि यह बड़ा होने पर घर की नींव को नुकसान पहुंचा सकता है, इसीलिए इसे घर में या घर के आसपास लगाने से मना करते हैं। इसे बोनसाई के रूप में, घर के पिछले हिस्से में लगा सकते हैं। पीपल में विष्णु भगवान व अन्य देवताओं का वास माना जाता है, अतः पीपल का वृक्ष लगाने और लगवाने से पुण्य मिलता है और ग्रहों की बाधा समाप्त होती है।

पूजन-लाभः- पीपल को जल चढ़ा कर, उसकी परिक्रमा करने से संतान दोष नष्ट होता है तथा घर में बीमारियां नहीं रहतीं। शनिवार के दिन पीपल के नीचे सरसों के तेल का दीपक जलाने से दुर्घटना होने से बचाव होता है।

हरसिंगारः- छोटे-छोटे फूलों वाला और अपनी अदभुत सुगंध के लिए जाना जाने वाला यह पौध ा चंद्र से संबंध रखता है। घर के बीचो बीच या घर के पिछले हिस्से में इसको लगाना लाभकारी होता है। इसके पत्तों से जोड़ों का दर्द दूर होता है और इसकी सुगंध से मानसिक शांति मिलती है।

पूजन-लाभः- घर में इसका पौधा होने से आर्थिक संपन्नता आती है। हरसिंगार के पौधे की देखभाल में थोड़ी सावधानी रखनी होती हैं, क्योंकि जरा-सी लापरवाही से यह सूख जाता है और इसके सूखने से मन पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता।

बेलः- बेल यूं तो एक विशाल वृक्ष है, परंतु इसको पौधे के रूप में गमले में घर के मुख्य द्वार पर लगा सकते हैं। बेल का पौधा अत्यंत शक्तिशाली ऊर्जा पैदा करता है, जिससे आयु और स्वास्थ्य की रक्षा होती है।

पूजन-लाभः- यह भगवान शिव का अत्यंत प्रिय पौधा है। शिवजी को बेल पत्र अर्पित करने से जीवन और आयु की रक्षा की जा सकती है। ज्योतिष में यह पौधा मुख्य रूप से शुक्र और चंद्र को नियंत्रित करता है।

गुड़हलः- यह पौधा ज्योतिष में सूर्य और मंगल से संबंध रखता है, लेकिन ज्योतिषीय दृष्टि से वही पौधा उपयोगी है, जिसका फूल लाल रंग का हो। गुडहल का पौधा घर में कहीं भी लगा सकते हैं, परंतु ध्यान रखें कि उसको पर्याप्त धूप मिलना जरूरी है।

पूजन-लाभः- गुडहल का फूल जल में डालकर सूर्य को अर्ध्य देना आंखों, हड्डियों की समस्या और नाम एवं यश प्राप्ति में लाभकारी होता है। मंगल ग्रह की समस्या, संपत्ति की बाधा या कानून संबंधी समस्या हो, तो हनुमान जी को नित्य प्रातः गुड़हल का फूल अर्पित करना चाहिए। इस प्रकार विभिन्न प्रकार के पौधे लगाकर हम पर्यावरण को भी बेहतर कर सकते हैं और अपने ग्रहों को भी अपने अनुकूल बना सकते हैं।

संस्थान की ओर से विशेष सुविधा

१- आज के भौतिकवादी युग में सर्व संकट निवारण हेतु श्री नृःसिंह जी के अनुष्ठान की विशेष व्यवस्था।

२- आज के भौतिकवादी युग में (मंगल, शनि, राहु-केतु की दशा, अन्तर्दशा, अनेक आपत्तियों, कष्टों एवं कार्यों में आ रही बाधा, असाध्य रोगों के अवसर पर अभीष्ट फल प्राप्ति के लिये अचूक अनुभव सिद्ध श्री बटुक भैरव शतमष्टोत्तर पूजा/पाठ/अनुष्ठानों की विशेष व्यवस्था।

३- यदि आप अपने दैनिक जीवन में परेशान हैं तो हमारे अनुभवों का लाभ लेकर लाभान्वित हो सकते हैं.

जैसेः- ग्रहदोष, देवदोष, पितृदोष, परकृत बाधा, व्यापार बृद्धि, ऋण मुक्ति, नवग्रह शान्ति आदि-आदि लौकिक समस्याओं के लिए !

४- वीडीयो के द्वारा पूजा की विशेष व्यवस्था।

www.navgrahvatika.com

कौन-सा ग्रह कब देता है धोखा

ज्योतिष में जन्म से लेकर ४८ वर्ष की उम्र तक सभी ग्रहों का उम्र के प्रत्येक वर्ष में अलग-अलग प्रभाव होता है। उनमें से नौ ऐसे विशेष वर्ष होते हैं, जो ग्रह से संबंधित वर्ष माने गए हैं जिन पर उस ग्रह का शुभ या अशुभ प्रभाव विशेष रूप से रहता है। ज्योतिष के अनुसार कौन-सा ग्रह उम्र के किस वर्ष में विशेष फल देता है इससे संबंधित जानकारी प्रस्तुत है।

१- वृहस्पतिः- सर्वप्रथम बृहस्पति ग्रह का असर हमारे जीवन में रहता है। उम्र का १६वाँ साल वृहस्पति का साल माना गया है। यही उम्र बिगड़ने की और यही उम्र सुधरने की है। वृहस्पति यदि चतुर्थ भाव में स्थित है तो १६वें वर्ष में व्यक्ति शिक्षा के क्षेत्र में लाभ पाता है और यदि छठे भाव में है तो हानि संभव हो सकती है।

२- सूर्यः- सूर्य ग्रह का असर आयु के २२वें वर्ष में नजर आता है। यदि उच्च का है तो सरकार से संबंधित कार्यों में पूर्ण लाभ मिलेगा और यदि अशुभ है तो सरकारी कार्यों में बाध ा उत्पन्न हो सकती है।

३- चंद्रमाः- चंद्र ग्रह का असर आयु के २४वें वर्ष में नजर आता है। उच्च या शुभ स्थिति में होने पर माता एवं अन्य सांसारिक सुखों की प्राप्ति होती है। अशुभ या नीच का होने पर माता के विषय में विपरीत फल की प्राप्ति एवं मानसिक तनाव मिल सकता है।

४- शुक्रः- शुक्र का असर आयु के २५वें वर्ष में विशेष रूप से दिखाता है। शुक्र के अच्छा होने पर पत्नी और सांसारिक सुख मिलेगा। यदि शुक्र नीच का है तो सुख में बाधा आएगी।

५- मंगलः- मंगल ग्रह का असर आयु के २८वें वर्ष में दिखता है। मंगल का अच्छा होने पर भाई, मकान, जमीन-जायदाद से संबंधित कार्यों में लाभ मिलने का योग हैं। जबकि खराब होने पर उपरोक्त विषयों में कमी हो सकती है।

६- बुधः- बुध ग्रह का असर आयु के ३४वें वर्ष में दिखता है। यदि अच्छा है तो व्यापार आदि में लाभ और खराब है तो हानि की सम्भावना है।

७- शनिः- शनि ग्रह का असर आयु के ३६वें वर्ष में नजर आता है। यदि अच्छा है तो मकान, व्यवसाय और राजनीति में लाभ लेकिन यदि अशुभ हो तो हानि देता है।

८- राहुः- राहु ग्रह अपना असर आयु के ४२वें वर्ष में प्रदान करता है। यदि शुभ स्थित में हो राजनीति आदि के क्षेत्र में विशेष लाभ, लेकिन यदि अशुभ हो तो व्यक्ति षड़यन्त्र का शिकार बनकर मानसिक तनाव झेलता रहता है।

९- केतुः- केतु ग्रह अपना असर आयु के ४२वें वर्ष में दिखाता है। यदि शुभ हो तो संतान एवं मामा के संबंध में विशेष लाभ और यदि अशुभ हो तो हानि।

नोटः- शुभ और अशुभ की स्थिति जानने के लिए जातक की कुंडली का समग्र अध्ययन किया जाता है।

करम की गठरी लाद के,
जग में फिरे इंसान !!
जैसा करे वैसा भरे,
विधि कस यही विधान !!
करम करे किस्मत बने,
जीवन का ये मरम !!
प्राणी तेरे भाग्य में,
तेरा अपना करम !!

नवग्रह वाटिका के प्रॉगढ़ में आपकी समस्त समस्याओं की पूजा का लाभ अब आप वीडियो के द्वारा करके लाभ प्राप्त कर सकते हैं!
09760689730. .... .08445289000

सौभाग्य को चमका देती है सूर्य रेखा

मनुष्य के हाथ में- सूर्य-रेखा को 'रविरेखा' या 'तेजस्वी-रेखा' भी कहा जाता हैं, कारण यह भाग्य-रेखा से होने वाले उज्जवल भविष्य या सौभाग्य को ठीक उसी प्रकार चमका देती हैं जिस प्रकार सूर्य अपने प्रखर प्रकाश से रात्रि के अंधकार को दूर करता है। जिस प्रकार से हिम के ढके हुई पर्वत श्रृंखलाओं को विशेष चमकाता हैं। इससे यह न समझ लेना चाहिये कि सूर्य-रेखा के अभाव में हाथ में पड़ी शुभ भाग्य-रेखा का कोई मूल्य ही नहीं होता या उसका प्रभाव ही मध्यम हो जाता हैं समझने के लिए उपर्युक्त शिखर-श्रृंखलाओं को ही ले लीजिये। वे बर्फ से ढंकी रहती हैं बर्फ का गुण हैं चमकना, चाहे रात्रि हो या दिन; उसके स्वाभाविक गुण चमकने में कोई अन्तर नहीं आता- वह सदा एक सा चमकता ही रहता हैं। सूर्य की किरणों से अन्तर केवल इतना ही होता हैं कि वे अपने सहयोग से उसमें एक विशेष प्रकार की चमक उत्पन्न कर देती है। और वह पहले की अपेक्षा और अधिक चमकने लग जाता है। यही बात रेखाओं के सम्बन्ध में भी है। यदि भाग्यरेखा के साथ सूर्य रेखा भी अधिक बलवान होकर पड़ी हो तो वह सोने में सुगन्ध का काम करती हैं, अर्थात् यों कहिये कि एक राजा को चक्रवर्ती सम्म्रट बनाने का काम करती है, यही भाव है।

यदि किसी के हाथ में भाग्य-रेखा निर्बल हो या उसका सर्वथा ही अभाव हो तो सुन्दर, छोटी सी सूर्य-रेखा के प्रभाव से वह व्यक्ति (स्त्री या पुरूष) वैसा प्रभावशाली न हो, फिर भी रजोगुणी अवश्य होगा। ऐसे व्यक्ति में सदैव धनाढय होने की, जनता में सम्मान पाने की या कोई बड़ा नेता बनने की अभिलाषाएँ बनी रहती हैं। वह दस्तकार न होकर भी दस्तकारों से प्रेम रखता हैं किसी विषय में पूर्ण ज्ञान रखते हुए भी वह अपनी योग्यता दूसरों पर प्रकट नहीं कर पाता। साधारण शुभ भाग्यरेखा के साथ भी सूर्य-रेखा अधिक उपयोगी समझी जाती है। इसमें संदेह नहीं कि जिस समय यह रेखा (सूर्य-रेखा) मनुष्य के हाथ में आरम्भ होती है उसी समय से उसके भाग्य में कुछ विशेष सुधार होने लग जाता है। यह रेखा निम्नलिखित सात स्थानों से आरम्भ होती है-

(१) मणिबन्ध या उसके समीप से।
(२) चन्द्रक्षेत्र से आरम्भ होकर सूर्य अंगुली की ओर
(३) जीवन-रेखा से।
(४) भाग्य-रेखा से प्रारम्भ होती है।
(५) मंगलक्षेत्र या हथेली के मध्य-भाग से।
(६) मस्तक-रेखा को स्पर्शकर।
(७) हृदय-रेखा को स्पर्श करती (सूर्य के स्थान पर जाती है)।

इन सात स्थानों से प्रारम्भ होने वाली सूर्य-रेखा हमें समय समय पर हमारी दुर्घटनाओं या हमारे भाग्य सम्बन्धी अनेक अनेक जटिल प्रश्नों को हल करती है। यहां पृथक-पृथक सातों प्रकारों का विस्तृत विचार किया जा रहा है।

(१) यदि सूर्य-रेखा मणिबन्ध या उसके समीप से आरम्भ होकर भाग्य-रेखा के निकट समानान्तर अपने स्थान को जा रही हो तो यह सबसे उत्तम मानी गयी है। ऐसी रेखावाला व्यक्ति स्त्री या पुरूष प्रतिभा ओर भाग्य का मेल होने से, जिस काम को हाथ लगाता या आरंभ करता हैं उसमें पूर्णतः सफल होता है।

(२) इसके विपरीत यदि सूर्य-रेखा चन्द्रक्षेत्र से आरम्भ होती हो तो इसमें संदेह नहीं कि उसका भाग्य चमकेगा, पर उसकी यह उन्नति निजी परिश्रम द्वारा न होकर दूसरों की इच्छा ओर सहायता पर अधिक निर्भर करती हैं संभव है, उसे उसके मित्र सहायता करें, या इस सम्बन्ध में अपनी कोई शुभ सम्मति दें जिससे वह उन्नति के पथ पर अग्रसर हो। चन्द्र क्षेत्र से आरम्भ होकर अनामिका अंगुलि तक पहुंचने वाली गहरी सूर्य रेखा के सम्बन्ध में यह बात अवश्य ध्यान में रखने की है। ऐसे व्यक्ति का जीवन अनेक घटनाओं से भरा और संदेह पूर्ण

होता है। उसमें बहुत से परिवर्तन भी होते हें किन्तु यदि रेखा चन्द्र स्थान से निकलकर भाग्य-रेखा के समानान्तर जा रही हो तो भविष्य सुखमय हो सकता है। यदि प्रेम बाधक न हो, और विचारों में दृढ़ता होने के साथ ही साथ मस्तक रेखा भी अपना फल शुभ दे रही हो। निश्चय ही ऐसा व्यक्ति (स्त्री या पुरूष) तेजस्वी और प्रसन्नचित्त होता है। फिर भी उसमें एक बड़ा भारी दोष यह पाया जाता है कि उसके विचार कभी स्थिर नहीं रहते। स्त्री या पुरूषों का उस पर अधिक प्रभाव पड़ता है और अनायास ही वह अपने पूर्वनिश्चित विचारों को बदल देता हैं वह यश पाने की इच्छा करता है, किन्तु अपने संकल्प पर दृढ़ न रह सकने के कारण अपने प्रयत्नों अधिक सफल नहीं होता।

(३) जीवन-रेखा से आरम्भ होने वाली स्पष्ट सूर्य-रेखा भविष्य में उन्नति और यश बढ़ाने वाली मानी गयी हैं किन्तु यह उन्नति उसके निजी परिश्रम और योग्यता से ही होती है। एक व्यावसायिक हाथ को छोड़कर शेष सभी हाथों में इसके प्रभाव से मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी कला में पूरी उन्नति कर सकता है। यह रेखा उपर्युक्त दशा में स्त्री या पुरूष के शीघ्र ग्राही होने का भी एक अचूक प्रमाण है ऐसे व्यक्ति सुन्दरता के पुजारी होते हैं ओर अपने जीवन का एक बड़ा भाग सौन्दर्य-उपासना में ही बिताते हैं यही कारण हैं कि वे उन स्त्री-पुरूषों की अपेक्षा, जिनकी सूर्य-रेखा स्वयं भाग्यरेखा से आरंभ हो रही हो, जीवन का अधिक उपभोग नहीं कर पाते।

(४) यदि यह रेखा भाग्य-रेखा से आरम्भ होती हो तो भाग्यरेखा के गुणों में वृद्धिकर उसकी शक्ति दुगनी कर देती है, प्रायः देखा गया है कि यह रेखा जिस स्थान से भाग्य-रेखा से ऊपर उठती है वहीं से किसी विशेष उत्कर्ष या उन्नति का आरम्भ होता है। रेखा जितनी ही अधिक स्पष्ट और सुन्दर होगी, उन्नति का क्षेत्र उतना ही विस्तृत और उन्नति भी अधिक होगी। ऐसी सूर्य-रेखा प्रायः ऐसे हाथों में भी दिख पड़ती है जो चित्रकार होना तो दूर रहा, एक सीधी रेखा भी नहीं खीच सकते। वे रंगों के अनुभवी भी इतने होते हैं कि पीले और गुलाबी रंग का अन्तर जानना भी उनकी शक्ति से बाहर की बात होती हैं अतः स्पष्ट है कि ऐसी रेखा वाला व्यक्ति कुशल कलाकार या दस्तकार नहीं हो सकता। हाँ, वह सुन्दरता का पुजारी और प्राकृतिक दृश्यों का प्रेमी अवश्य होता हैं दूसरे शब्दों में सुन्दरता तथा प्रकृति से प्रेम करना उनका एक स्वाभाविक गुण ही हो जाता है।

(५) मंगलक्षेत्र या हथेली के मध्यभाग से प्रारभ होने वाली सूर्य-रेखा अनेक आपत्ति और बाधाओं के बाद उन्नति सूचित करती है इसका सहायक मंगलक्षेत्र होता है यदि किसी के हाथ का मंगलक्षेत्र उच्च हो तो वह बहुत उन्नति करता है किन्तु मंगलकृत कष्ट भोग लेने के पश्चात् ही वह अपनी उन्नति कर पाता है।

(६) यदि यह रेखा मस्तक रेखा से आरंभ होती हो और स्पष्ट हो तो वह मानव के जीवन के मध्यकाल में (करीब ३५ वें वर्ष) तक उन्नति करता है उसकी यह उन्नति जातीय योग्यता और मस्तिष्क शक्ति के अुनसार होती है।

(७) हृदय-रेखा से आरम्भ होने वाली सूर्य-रेखा जीवन के उत्तरकाल में मानव की उन्नति करती है। यह अवस्था लगभग ५६ वर्ष की होगी, किन्तु एतदर्थ हृदयरेखा से ऊपर सूर्य रेखा का स्पष्ट होना आवश्यक है। ऐसी स्थिति में उस स्त्री या पुरूष के जीवन का चौथा चरण सुखमय या कम से कम निरापदा बीतता है। इसके विपरीत यदि हृदय-रेखा से ऊपर सूर्य-रेखा का सर्वथा अभाव हो या वह छोटे-छोटे टुकडों से बनी या टूटी-फूटी हो तो जीवन का चैथाकाल चिन्ताओं से भरा और अन्धकारमय व्यतीत होगा, विशेषतः तब जब कि भाग्य रेखा निराशाजनक हो।

यदि सूर्य-रेखा और भाग्यरेखा दोनों ही शुभफल देने वाली होकर एक दूसरी के समानान्तर जा रही हों, साथ ही मस्तक-रेखा भी स्पष्ट और सीधी हो तो वह धनाढ़य और ऐश्वर्यपूर्ण होने का

सबसे बड़ा लक्षण है। ऐसे योगवाला व्यक्ति (स्त्री या पुरूष) बुद्धिमान और दूरदर्शी होने के कारण जिस काम को हाथ लगाता हैं उसी में सफल होता है।

यदि हाथ में सूर्य की अंगुली पहली अंगुली तर्जनी से अधिक लम्बी और बीच की मध यमांगुलि के बराबर हो, साथ ही सूर्य-रेखा से अधिक बलवान हो तो उस मनुष्य की प्रवृत्ति जूआ खेलने की ओर अधिक पायी जाती है, किन्तु उसमें धन या गुणों का अभाव नहीं होता। हाँ, कभी-कभी यदि मस्तक-रेखा नीचे की ओर झुकी हो तो उसका और भी अधिक बुरा प्रभाव पड़ता हैं जैसे-सदां सट्टा, लाटरी या जुआ खेलना, शर्त लगाना आदि।

यदि सूर्य-रेखा सूर्यक्षेत्र की ओर न जाकर शनि की अंगुली की ओर जा रही हो तो उस व्यक्ति की उन्नति या सफलता शोक और कठिनाइयों से मिली होती हैं। ऐसे व्यक्ति धनवान और उन्नतिशील होकर भी प्रायः सुखी नहीं रह पाते। यदि यह रेखा शनिक्षेत्र को काट रही हो या अपनी कोई शाखा गुरूक्षेत्र की ओर भेज रही हो तो उसकी उन्नति या सफलता कोई शासन-अधिकार अथवा राज्य द्वारा उच्चपद्वी पाने के रूप में होगी। परन्तु रेखा का यह लक्षण किसी भी दशा में इतना प्रभाव पूर्ण नहीं हो सकता जितना भाग्य-रेखा के गुरू अंगुली की ओर जाने के सम्बन्ध में हो सकता है।

प्रायः देखा गया है कि छोटी-छोटी एक या एक से अधिक रेखाएँ एक दूसरी के समानान्तर में सूर्यक्षेत्र पर दौड़ती पायी जाती हैं। ऐसे योगवाले व्यक्ति के विचार बिखरे होते हैं वह कभी कुछ करना चाहता है तो कभी कुछ। अतएव वह व्यापार, चित्रकारी या कला-कौशल किसी भी विशेष काम में कभी उन्नति नहीं कर पाता। सूर्यरेखा के साथ कुछ ऐसे चिन्ह भी पाये जाते हैं जो भाग्योन्नति में बाधा डालते हैं उदाहरणार्थ-हथेली यदि अधिक गहरी हो तो वह अशुभ लक्षण हैं।

जीवन के हर संकट में
श्री नरसिंह भगवान आपकी रक्षा करें.

प्रेरक प्रसंग :-

संसार को राजी करना असंभव है

एक साधू किसी नदी के पनघट पर गया और पानी पीकर पत्थर पर सिर रखकर सो गया..!!

पनघट पर पनिहारिन आती-जाती रहती हैं!

तो एक परिहारिन ने कहा- आहा! साधु हो गया, फिर भी तकिए का मोह नहीं गया, पत्थर का ही सही, लेकिन रखा तो है।

पनिहारिन की बात साधु ने सुन ली। उसने तुरंत पत्थर फेंक दिया।

दूसरी बोली- 'साधु हुआ, लेकिन खीज नहीं गई', अभी रोष नहीं गया, तकिया फेंक दिया।

तब साधु सोचने लगा, अब वह क्या करें ?

तब तीसरी बोली- 'बाबा! यह तो पनघट है, यहां तो हमारी जैसी पनिहारिनें आती ही रहेंगी, बोलती ही रहेंगी, उनके कहने पर तुम बार-बार परिवर्तन करोगे तो साधना कब करोगे?'

लेकिन चौथी ने बहुत ही सुन्दर और एक बड़ी अद्भुत बात कह दी- 'क्षमा करना, लेकिन हमको लगता है, तुमने सब कुछ छोड़ा लेकिन अपना चित्त नहीं छोड़ा है, अभी तक वहीं का वहीं बने हुए है।

दुनिया पाखण्डी कहे तो कहे, तूम जैसे भी हो, हरिनाम लेते रहो।'

सच तो यही है, दुनिया का तो काम ही है कहना।

आंखे बंद करोगे तो कहेंगे कि...

'ध्यान का नाटक कर रहा है।'

चारों ओर देखोगे तो कहेंगे कि..

'निगाह का ठिकाना नहीं। निगाह घूमती ही रहती है।' और परेशान होकर आंख फोड़ लोगे तो यही दुनिया कहेगी कि...

'किया हुआ भोगना ही पड़ता है।'

ईश्वर को राजी करना आसान है,
लेकिन संसार को राजी करना असंभव है।

दुनिया क्या कहेगी, उस पर ध्यान दोगे तो...???

आप अपना ध्यान नहीं लगा पाओगे !!

श्री नरसिंह जय जय नरसिंह

श्री नृःसिंह रमल ज्योतिष शोध संस्थान

मंदिर श्री नृःसिंह भगवान, चकलेश्वर रोड, गोवर्धन द्वारा

पराविज्ञान की सहायता से रमल ज्योतिष पर निजी शोध की जनकल्याणार्थ प्रस्तुति.

......विश्व में प्रथमबार स्थापित......

'श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड'

(असाध्य बीमारियों को नष्ट करने वाला जल, के बाद अब जनकल्याणार्थ उपयोग हेतु)

श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड के जल एवं
वेदोक्त नवग्रह वाटिका की समिधाओं से मिश्रित

श्री गिरिराज ज्योति

नवग्रह चंदन
(नवग्रहों के शान्तार्थ)

वेदोक्त नवग्रह वाटिका
में प्राण-प्रतिष्ठित
दक्षिणावर्ती शंख !

श्री नरसिंह जय जय नरसिंह
श्री नृःसिंह कवच से सम्पुट एवं श्री
नवग्रह यंत्र सहित ऋण मुक्ति यंत्र

श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड के जल से अभिमंत्रित, श्री नृःसिंह कवच एवं श्री नवग्रह मंत्रों से वेदोक्त नवग्रह वाटिका में प्राण-प्रतिष्ठित !

श्री नृःसिंह नवग्रह कवच
नवग्रह लाकेट

सर्व संकट निवारणार्थ, ग्रहदोष, देवदोष, पितृदोष, परकृत बाधा, व्यापार वृद्धि, ऋणमुक्ति, नवग्रह शान्ति आदि-आदि लौकिक एवं भौतिक समस्याओं के लिए!

सभी राशियों के प्राण-प्रतिष्ठित रत्न-उपरत्न

प्राप्ति स्थान **श्री लक्ष्मी नृःसिंह नवग्रह वाटिका**

ykdef.k fogkj] jk/kkd|.M ifjØek ekx] xko/ku ¼eFkjk½

Ph- 09760689730
08445289000

Email: navgrahvatika@gmail.com
Web- www.navgrahvatika.com

श्री गिरिराज महाराज की जय
रमल ज्योतिष द्वारा
भूत, भविष्य वर्तमान सम्बन्धित प्रश्नों के
उत्तर एवं समस्त समस्याओं का समाधान
केवल फोन पर
समय दोपहर 12:00 से शायं 05:00 तक
Mob.- 09412226020 / 09760689730
शाखा-कार्यालय
श्री गिरिराज ज्योति पत्रिका
अशोक कैसिट सैंटर
१८३-१८४, प्रथम तल,
विकास बाजार, मथुरा।
अशोक कुमार गुप्ता (सहसंपादक)
Mob.- 09412281034
श्री नृःसिंह स्तुति
हे नृःसिंह हम तो बने तुम्हारे।
अब मर्जी रही तुम्हारी बनो न बनो हमारे।। हे नृःसिंह।।
जाँति–पाँति, कुल, धर्म, धन सब कुछ तुम पर वारे।
जैसा चाहो नाच नचा लो, हर प्रकार हैं तुम्हारे।। हे नृःसिंह।।
सुनते थे गज, गीध, अजामिल, प्रह्लाद भक्त उवारे।
पर ना जाने मेरे कारण क्यूँ बन्द कर लिये दरबाजे।। हे नृःसिंह।।
छोड़ गये सब स्वारथ साथी अपनी राह सिधारे।
दीन–अधीन, मलीन–हीन के अब हो तुम्हीं सहारे।। हे नृःसिंह।।
पूर्व कर्म कृत कुटिलं प्रकृति वश छोड़े साधन सारे।
चढ़ा रहे हैं चरणों में अश्रु बूंद फुहारे।। हे नृःसिंह।।
हे नृःसिंह हम तो बने तुम्हारे।
अब मर्जी रही तुम्हारी बनो न बनो हमारे।। हे नृःसिंह।।
श्री नृःसिंह शरणं मम् !

RNI NO- UPHIN-1999/975 PRINTED BOOK- 121/1

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक :- पं. कैलाश चन्द्र मिश्रा संपादक श्री नृःसिंह रमल ज्योतिष शोध संस्थान, श्री नृःसिंह मंदिर चकलेश्वर रोड, गोवर्धन-२८१५०२ (मथुरा) उ.प्र. के लिए आर. के. प्रिंटर्स, १९ डी, गोविन्द नगर मथुरा द्वारा मुद्रित।